International Journal of Home Science 2019; 5(2): 366-368

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2019; 5(2): 366-368
© 2019 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 28-03-2019
Accepted: 30-04-2019

नीलम श्रीवास्तव
शोध छात्रा, महार्षि युनिवर्सिटी आफ इन्फारमेषन टेक्नालाजी लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

नीलमा कुँवर
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

तृप्ति सिंह
विभागाध्यक्ष, गृह विज्ञान, आर0बी0एस0 कालेज, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
नीलम श्रीवास्तव
शोध छात्रा, महार्षि युनिवर्सिटी आफ इन्फारमेषन टेक्नालाजी लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

बालकों में बढ़ते बाल अपराध के लिए मित्र–मंडली एवं पड़ोस के स्वरूप की भूमिका

नीलम श्रीवास्तव, नीलमा कुँवर, तृप्ति सिंह

सारांश
21वीं सदी में जहां नगरीकरण व औद्योगीकरण तीव्रता से बढ़ रहे हैं, वहीं वर्तमान में अपराध के साथ–साथ बाल अपराध की समस्या भी तीव्र गति से बढ़ रही है। बाल अपराध की समस्या इतना गम्भीर रूप धारण कर रहीं है कि अब यह एक सामान्य समस्या मानकर छोड़ देना उचित नहीं है। बाल अपराध की समस्या वर्तमान समाज की समस्या ही नहीं अपितु यह समस्या कई युगों से समाज में व्याप्त थी। जैसे–जैसे समाज विकसित होता गया वैसे–वैसे यह समस्या भी गम्भीर रूप धारण करने लगी।

कूट शब्दः बाल अपराध, मित्र मण्डली, भुमिका

प्रस्तावना
बालक के मित्र बालक के व्यक्तित्व को बहुत ज्यादा प्रभावित करते हैं। प्रत्येक बालक अन्य बालकों के साथ सहसम्बंध स्थापित करता है। कुछ बालक अपनी ही आयु के कुछ अपने से बड़ी आयु के तथा कुछ अपने से छोटी आयु के बालकों से सम्बन्ध बनाते हैं। बाल अपराध खेल समूह से ही विकसित होता है। बालक को जब परिवार में उचित देखभाल या स्थिति प्राप्त नहीं होती तो वह बाहर अपने मित्रों के साथ मिलकर एक ऐसा दल या गुट बना लेता है जिसमें वह भूमिका निभा सके। गुट का बहुत बड़ा हाथ बालक को अपराध की ओर प्रवृत्त करता है। यह गुट आवारा समूह, सड़क किनारे के समूह एवं अपराधी समूहों के नाम से समाज में व्याप्त रहते हैं। इसी तरह पड़ोस व्यक्तित्व विकास की एक विशिष्ट श्रृंखला है। साधारणतया ऐसा समझा जाता है कि जिस प्रकार का पड़ोस होगा सामाजीकरण भी उसी के अनुरूप होगा। सामाजिक जीवन के विभिन्न अभिकरणों में परिवार की भूमिका उसकी संस्कृति निःसंदेह सर्वापरि है। परिवार के बाद मनुष्य के जीवन में जिन अभिकारणों एवं माध्यमों की भुमिका है। इसमें पड़ोस का महत्वपूर्ण स्थान है। घर के बाद बालक विस्तृत समाज के जिन अन्य दायरों में प्रवेश करता है इनके अन्तर्गत पड़ोस सर्वप्रथम आता है जिसे कूले ने 'प्राथमिक समूह' की सीमा में लिया गया है। सामाजिक नियंत्रण करने वाले समूह के रूप में पड़ोस का महत्व गांवों में ज्यादा होता है, फिर भी व्यक्ति पर विशेषकर बच्चों के विकास में इसका अभी भी महत्व है। बालक यहीं पर खेलता है और यहीं पर उसका मनोरंजन होता है और यहीं पर वह नयी–नयी बातें सीखता है। यदि पड़ोस दूषित होगा अर्थात यदि पड़ोस के लोग असामाजिक कृत्यों में संलग्न रहेंगे तो इसका प्रभाव पड़ोस के बच्चों पर भी पड़ेगा। ''पड़ोस अपराधी व्यवहार इस प्रकार उत्पन्न करता है कि व्यक्तित्व की मूल आवश्यकताओं में बाधा उत्पन्न होती है, सांस्कृतिक संघर्ष उत्पन्न होता है तथा समाज विरोधी मूल्यों का पोषण करता है, स्वाभाविक विकास में बाधा उत्पन्न करता है तथा कभी–कभी तो अपराधी गिरोह की भी रचना करता रहता है। बालक जैसी स्थितियों में रहता है, बहुधा वैसा ही व्यवहार करता है। यदि आस–पास का पड़ोस अच्छा है तो बालक भी अच्छा बनेगा और यदि पड़ोस बुरा है या दूषित है तो बाल में भी बुरे संस्कार पनप जायेंगे। यदि बालक का निवास स्थान असांस्कृतिक तथा अनैतिक लोगों के बीच है तो स्वाभाविक ही है कि वह अश्लील या अभद्र व्यवहार करेगा।

अध्ययन के उद्देश्य
1. बाल अपचारियों के परिवार की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. बाल अपचार करने के कारणों का अध्ययन करना तथा निराकरण हेतु कारगार उपायों की खोज करना।

अध्ययन पद्धति

अध्ययन के लिए उत्तर प्रदेश के दो जिले लखनऊ एवं मेरठ का चयन किया गया है। लखनऊ एवं मेरठ में स्थित राजकीय बाल सुधार गृहों में से 100–100 बाल अपचारियों को चुना गया है। इस प्रकार कुल 200 बाल अपचारियों पर अध्ययन किया गया है। अध्ययन पद्धति में सांख्यिकीय उपकरण मध्यमान एवं प्रामाणिक विचलन का इस्तेमाल किया गया है।

परिणाम

सारिणी 1: बाल अपचारियों की शैक्षणिक स्थिति एवं पड़ोस में रहने वाले लोगों की आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन संख्या=200

आयु	पड़ोस में रहने वाले लोगों की आर्थिक स्थिति				योग
	बहुत धनवान	धनवान	गरीब	सामान्य	
अनपढ़	0 (0.0)	0 (0.0)	82 (77.36)	24 (22.64)	106 (100.0)
मैट्रिक से कम	0 (0.0)	1 (1.72)	37 (63.79)	20 (34.49)	58 (100.0)
मैट्रिक	0 (0.0)	0 (0.0)	10 (45.45)	12 (54.55)	22 (100.0)
इण्टर	0 (0.0)	1 (7.14)	6 (42.86)	7 (50.0)	14 (100.0)
योग	0 (0.0)	2 (1.0)	135 (67.5)	63 (31.5)	200 (100.0)

(कोष्ठक में दिए गए आंकड़े प्रतिशत में हैं)

अनपढ़ बाल अपचारियों के पड़ोस में सर्वाधिक लोग निर्धन हैं, मैट्रिक से कम शिक्षित बाल अपचारियों के पड़ोस में भी सर्वाधिक लोग निर्धन हैं जबकि मैट्रिक तथा इण्टर तक शिक्षित बाल अपचारियों के पड़ोस में लोग सामान्य हैं। बहुत धनी आर्थिक स्थिति के लोग एक भी नहीं हैं।

सारिणी 2: बाल अपचारियों के पड़ोस में जेल गये व्यक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन संख्या=200

जेल गया व्यक्ति	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	155	77.5
नहीं	45	22.5
योग	200	100.0

22.5 प्रतिशत ऐसे व्यक्ति रहते हैं जो कभी जेल नहीं गए हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि सर्वाधिक बालकों के पड़ोस के लोग जेल जा चुके हैं। जेल गए व्यक्ति का तात्पर्य उस व्यक्ति से है जो भारतीय दण्डसंहिता के अधीन जेल गया है या किसी अपराध में साथ देने के लिए पुलिस ने उसे गिरफ्तार करके एक या अधिक दिन के लिए जेल में रखा हो।

तालिका 3: बाल अपचारियों के जेल जाने के कारण का तुलनात्मक अध्ययन संख्या=200

जेल जाने के कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
चोरी	87	56.13
हथियार	5	3.22
हत्या	–	0.0
लड़ाई–झगड़ा	46	29.68
अन्य	17	10.97
कुल	100	100.0

संक्षेप में कहा जा सकता है कि सर्वाधिक बाल अपचारियों के पड़ोसी चोरी के अपराध से ग्रसित हैं।

तालिका 4: बाल अपचारियों के मित्रों की संख्या का तुलनात्मक अध्ययन संख्या=200

मित्रों की संख्या	आवृत्ति	प्रतिशत
1–6	78	39.5
6–12	91	46.2
12–20	28	14.3
कुल	100	100.0

बालक पर मित्रों का बहुत प्रभाव होता है और उनकी संख्या बालकों को और भी अधिक प्रभावित करती है। बालकों के विभिन्न प्रकार के मित्र मिलकर एक गुट बनाते हैं और विभिन्न प्रकार के वैध और अवैध दोनों प्रकार के कार्यों की योजनाएं बनाते हैं जो उन्हें बाल अपराध की तरह ढकेलते हैं।

तालिका 5: बाल अपचारियों के मित्रों की आयु का तुलनात्मक अध्ययन संख्या=200

मित्रों की आयु	आवृत्ति	प्रतिशत
उनके समान	137	69.7
उनसे बड़ा	22	11.2
उनसे छोटे	38	19.3
कुल	100	100.0

बाल अपचारी अपने बराबर के आयु के बालकों से या कम आयु के बालकों और अपने से अधिक आयु के बालकों से मित्रता करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि सर्वाधिक बाल अपचारियों के मित्रों की आयु क्या है? आयु के द्वारा मनुष्य की बौद्धिक परिपक्वता की गणना होती है। जैसे मनुष्य की आयु बढ़ती जाती है। वैसे–वैसे उसके मस्तिष्क का भी विकास होता है और समाज को समझने लगता है। उसके मूल्यों को समझता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि सर्वाधिक बाल अपराधियों के मित्र उन्हीं की आयु के समान हैं।

तालिका 6: बाल अपचारियों द्वारा एक साथ किए गए कार्य का तुलनात्मक अध्ययन संख्या=200

एक साथ करने वाले कार्य	आवृत्ति	प्रतिशत
खेलकूद	12	6.67
चोरी	52	28.89
झगड़ा	106	58.89
अपराध कार्य	10	5.55
कुल	100	100.0

संक्षेप में कह सकते हैं कि सर्वाधिक 58.89 प्रतिशत बाल अपराधी अपने मित्रों के साथ मिलकर दूसरे बालकों से झगड़ा–लड़ाई आदि करते हैं। किसी से भी मारपीट करने के लिए ये तुरन्त एक समूह बनाकर तैयार हो जाते हैं और ऐसे ही उनके अन्दर बुरी आदतें पड़ जाती हैं जैसे नशा करना, चोरी करना, जुआ खेलना, भगोड़ापन आदि।

तालिका 7: बाल अपचारियों के मित्रों की बुरी आदतों का तुलनात्मक अध्ययन संख्या=200

बुरी आदतें	आवृत्ति	प्रतिशत
अक्सर घर या स्कूल से भाग जाना	17	9.09
जुआ खेलना	10	5.35
चोरी करना	70	37.43
नशीली वस्तुओं का सेवन	90	48.13
कुल	100	100.0

संक्षेप में कह सकते हैं कि सर्वाधिक 48.13 प्रतिशत बाल अपचारियों के मित्र नशीले पदार्थों का सेवन करना जैसी बुरी आदतों से ग्रसित हैं।

निष्कर्ष

मित्र मण्डली बालकों को बहुत प्रभावित करती है। प्रत्येक बालक दूसरे बालकों को अपना मित्र बनाना चाहता है उससे सम्बन्ध रखता है। बाल अपराध में मित्र–मण्डली का बहुत बड़ा योगदान है क्योंकि अच्छी संगति एवं बुरी संगति बालक को अत्यंत प्रभावित करती है और बुरी संगति के कारण ही बालक अपराध की ओर प्रेरित होता है।

सुझाव

1. पड़ोस व्यक्तित्व विकास की एक विशिष्ट श्रृंखला है। साधारणतया ऐसा समझा जाता है कि जिस प्रकार का पड़ोस होगा सामाजीकरण भी उसी के अनुरूप होगा। सामाजिक जीवन के विभिन्न अभिकरणों में परिवार की भूमिका उसकी संस्कृति निःसंदेह सर्वापरि है। परिवार के बाद मनुष्य के जीवन में जिन अभिकारणों एवं माध्यमों की भुमिका है। इसमें पड़ोस का महत्वपूर्ण स्थान है। बालक जैसी स्थितियों में रहता है, बहुधा वैसा ही व्यवहार करता है। यदि आस–पास का पड़ोस अच्छा है तो बालक भी अच्छा बनेगा और यदि पड़ोस बुरा है या दूषित है तो बाल में भी बुरे संस्कार पनप जायेंगे। बाल अपराधियों को पड़ोस बहुत प्रभावित करता है। परिवार के उपरान्त पड़ोस बालक के व्यक्तित्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः जैसा पड़ोस होगा वैसा ही बालक का व्यवहार भी होगा। इसलिए माता–पिता को चाहिए वह जहाँ भी मकान खरीदें या किराये का लें वहां के रहने वाले लोग सभ्य हों जिनसे उनके बालक एक सभ्य नागरिक बन सकें।
2. बाल अपचार को रोकने हेतु पुलिस को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। पुलिस को उन स्थानों पर शाम के समय पर गश्त करनी चाहिए जो अपराधिक गतिविधियों के अड्डे होते हैं।

संदर्भ

1. Glueck S, Glueck E. One thousand juvenile delinquents, Cambridge (Massachusetts): Harward University Press, 2002.
2. Gupta Vishesh. An article on Psychology of Child Violence, Dainik Jagran, 3rd June 2009 publication, 2009.